ABVP

आपदा

विश्व और भारत की संस्कृति

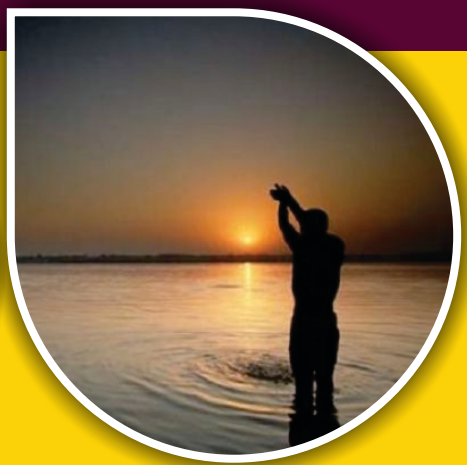

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्
ब्रज प्रांत

आपदा

विश्व और भारत की संस्कृति

प्रकाशकः

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् – ब्रज प्रांत

29/31, धीरेन्द्र भवन, राजा की मण्डी, आगरा-282002, उ०प्र०

✪ प्रकाशक

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् – ब्रज प्रांत

29/31, धीरेन्द्र भवन, राजा की मण्डी, आगरा-282002, उ०प्र०

मो० +91 9897909888, e-mail : brajabvp@gmail.com

✪ इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि के लिये प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा। किसी भी परिवाद के लिये न्यायिक क्षेत्र केवल आगरा ही होगा।

✪ इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में उद्धृत, अनुवादित या प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

✪ इस ई-बुक में प्रकाशित आलेख विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विचार हैं, इसमें प्रकाशित आलेखों पर प्रकाशक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

✪ सर्वाधिकार लेखक एवं प्रकाशकाधीन हैं।

✪ मूल्य : निःशुल्क वितरण हेतु

✪ डिजाइनिंग एवं लेजर टाइप सैटिंग

प्राइम डिजाइन ग्राफिक्स

केशवदेव कॉम्पलैक्स, गोवर्धन चौराहा, मथुरा

मो० +91 8433226499

✪ ऑनलाइन प्रमोशन

डिजिदूत

कृष्णा नगर, मथुरा

मो० +91 7011410684

संपादकीय

आपदाएं विश्व में प्राकृतिक एवं मानवजनित कारणों से समय-समय पर आती रही हैं, जिससे मानव जीवन सदैव प्रभावित हुआ है। प्राकृतिक संतुलन जब-जब विकृत हुआ है तब प्रकृति ने खुद को संतुलित करने के लिये स्वयं ही कार्यवाही की है, परंतु इसके साथ ही मानव ने भी अपने जीवन में भूल सुधारकर सदा प्रकृति से सामंजस्य बैठाकर अपनी सभ्यता को आगे बढ़ाया है।

तत्कालीन समय में सम्पूर्ण दुनियाँ एक आपदा (कोरोना वायरस) से जूझ रही है, जिसका कोई भौतिक स्वरूप दृष्टिगोचर नहीं है। ऐसे समय में विश्व के अनेकों अनेक देश एवं उनके नागरिक इस अदृश्य विषाणु जनित आपदा से लड़ने हेतु भारत की सनातन संस्कृति, भारत के योग, आयुर्वेद, ज्योतिष की तरफ देख रहे हैं।

भारत के अभिवादन पद्धति (नमस्ते) को विश्व स्तर पर प्रासंगिकता मिली है, भारत के योग - आयुर्वेद जैसे उपचार पद्धतियों को स्वास्थ्य लाभ हेतु विश्व अपना रहा है, भारत के पंचांग एवं ज्योतिष ने जिस तरह से प्राकृतिक आपदाओं के समय की काल गणना की, उससे विश्व खासा प्रभावित हुआ है। वसुधैव कुटुंबकम-सर्वमंगल की भावना वाले गौरवशाली राष्ट्र भारत की सद्भावना लोगों तक पहुँच रही है। इस समय यह अति आवश्यक है कि मानव एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाये और इस बीमारी को फैलने से रोके परन्तु मानव जाति के लिए अपने आपको एक स्थान पर रोके रखना एक चुनौती सिद्ध हो रहा है।

अत: ऐसे समय में सकारात्मकता को आगे बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ब्रज प्रान्त की ओर से आलेख आमंत्रण की अपनी एक विशेष भूमिका है, इस स्थिति में जब युवा प्रतिकूलता की स्थिति महसूस करता है तो अपने भावों को शब्दों की माला में पिरोकर अपने विचारों को ऊर्जावान वाक्यों में सम्मिलित कर लेख लिखने के लिये अग्रसर हो सकता है। आपदा, विश्व और भारत की संस्कृति नामक पुस्तिका में ऐसे ही कई युवा विचारों को सम्मिलित किया जाना एक सकारात्मकता की पहल है। जब सभी कार्यों को रोक कर, मानव को अपने घर में ही रुकने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है, ऐसे समय में युवाओं की ऊर्जा का सही दिशा में लगना, इस पुस्तक की सार्थकता है। पुस्तक के माध्यम से युवाओं के विचारों का संकलन कर समाज में पहुँचाने हेतु किये गये इस प्रयास से समाज में जन जागरण की स्थिति और बलित होगी।

सम्पूर्ण भारतवर्ष इस बात से परिचित है कि अभाविप ने अपने स्थापना काल से ही राष्ट्र पुर्ननिर्माण ध्येय रखा है। जिस प्रकार ओजोन परत इस पर्यावरण के वातावरण की रक्षा करती है उसी प्रकार अभाविप का प्रत्येक कार्यकर्ता इस भारतवर्ष की सेवा व रक्षा करने के लिए संकल्पित है।

इन सभी स्थितियों का आंकलन करने के उपरान्त अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ब्रज प्रान्त के द्वारा इस ई-पुस्तक की रचना की जा रही है। जिसमें ब्रज प्रान्त के कार्यकर्ताओं का इस महामारी, अभाविप कार्यकर्ताओं की भूमिका एवं वैदिक - सनातन संस्कृति के प्रति जो गहरी चिन्तन व मनन है का संग्रह किया गया है। अभाविप ब्रज प्रान्त के द्वारा बहुत ही सुनियोजित ढंग से इस पुस्तक का संकलन किया गया है।

अभाविप ब्रज प्रान्त आशा करता है कि सभी पाठकों को इस पुस्तक से वर्तमान परिस्थिति में किये गये सभी सकारात्मक कार्यों से परिचय होगा एवं ज्ञान वर्धन की दृष्टि से भी लाभ प्राप्त होगा।

-सादर धन्यवाद

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद - ब्रज प्रान्त

शुभकामना संदेश

"छात्र कल का नहीं आज का नागरिक है" यह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की मान्यता है तथा छात्रों के कार्यों को रचनात्मक दृष्टिकोण देना हमारी कार्यपद्धति का अभिन्न अंग है। आज कोरोना जैसी महामारी से अखिल विश्व संकट ग्रस्त है। भारत भी इस महामारी से अछूता नहीं है। जिसकी रोकथाम हेतु शारीरिक दूरी ही एकमात्र विकल्प है। इसको ध्यान में रखते हुए हमारे देश में 21 दिवसीय तालाबन्दी का निर्णय हमारे प्रधानमंत्री जी के द्वारा लिया गया। इस तालाबन्दी के कारण सारे विद्यालय एवं महाविद्यालय भी बंद हैं। महाविद्यालयों में अकादमिक कार्य बाधित है। छात्र अपने-अपने घरों में हैं। इस कठिन समय में विद्यार्थी परिषद ने छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को मंच देने का एक रचनात्मक प्रयास किया तथा छात्र-छात्राओं के मनोगत भावों को मंच प्रदान करने के लिये अभाविप ब्रज प्रान्त ने ई-पुस्तिका के प्रकाशन का श्लाघनीय निर्णय लिया।

नव लेखकों के मनोभावों का प्रस्फुटन शब्दों के माध्यम इस ई-पुस्तिका में हो रहा है। निश्चित ही यह ई-पुस्तिका पाठक वर्ग के लिये अत्यन्त प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

अभाविप ब्रज प्रान्त के समस्त कार्यकर्ताओं तथा सभी नव लेखकों को असीम शुभकामनायें।

-सुश्री निधि त्रिपाठी

राष्ट्रीय महामत्री, अभाविप

विषय-सूची

संपादकीय

1. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की प्रासंगिकता 1
2. Role of indian defence forces and medical service provides in disaster 3
3. आपदा के समय में भारत के सुरक्षा बलों एवं चिकित्सकीय सेवा प्रदाताओं का योगदान 4
4. Message of nature to scientifically well developed materialistic world 5
5. वैज्ञानिक भौतिकवादी प्रगतियुक्त विश्व को प्रकृति का एक कठोर संदेश 6
6. कोरोना से युद्ध में आत्मअनुशासन रूपी हथियार : लॉकडाउन 7
7. देश दुनिया की आपदाओं के समय ABVP कार्यकर्ताओं की भूमिका 9
8. कोरोना के खिलाफ युद्ध में मेरी जिम्मेदारी 11
9. My experience and responsibilities in the Time of Lockdown 12
10. Role of media and social media in Lockdown 14
11. लॉकडाउन प्रबंधन में सोशल मीडिया एवं मीडिया का योगदान 16
12. कोरोना से राष्ट्र की रक्षा हेतु जागरुकता अभियान में ABVP कार्यकर्ताओं की भूमिका 18
13. सकारात्मक सोच एवं सकारात्मक रवैये से जीतेगा भारत 20
14. लॉकडाउन के समय का सदुपयोग को पुस्तकों से समाज को जोड़ने के लिये ABVP की सकारात्मक पहल 22

15. कोरोना से अर्थव्यवस्थाओं पर प्रहार : एक गंभीर चुनौती 23
16. Corona strikes the economy: A serious challenge 25
17. जरूरतमंदों के लिये ABVP कार्यकर्ताओं की पहल 28
18. कोरोना के कारण एक दूसरे के करीब आते देशों के लिये प्रेरणास्त्रोत भारत 30
19. Presentation of indian culture and culture in the current globle council 32
20. मेरे अनुभव एवं जिम्मेदारियाँ लॉकडाउन एवं जनता कर्फ्यू के समयकाल में 34

1 वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की प्रासंगिकता

वर्तमान में चीन द्वारा उत्पन्न वैश्विक महामारी कोरोना जिसने पूरी वैश्विक अर्थ व्यवस्था व मानव संपदा को उथल-पुथल करके रख दिया है। W.H.O. द्वारा भी इसे अधिक घातक विषाणु जनित महामारी घोषित किया गया है। इसी परिदृश्य में भारतीय संस्कृति जिसका कुछ शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है, जो पूरे विश्व में एक केन्द्र बिन्दु के रूप में उभर रही है, जिसका उद्देश्य इस महामारी में एक भारत श्रेष्ठ भारत का है।

चीन के वुहान शहर में उत्पन्न यह विषाणु दिसम्बर 2019 में देखने को मिला है, यह बीमारी महामारी का रूप ले चुकी है जिसे दृष्टिगत रखते हुए W.H.O. द्वारा इसका नाम Covid-19 रखा गया है। पूर्व में सभी को ज्ञात है इसके उत्पन्न होने के कई कारण हैं परन्तु जिसका ज्यादा उल्लेख किया जा रहा है वह है वे जुवान जानवरों को मार कर खाना। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उनके अन्दर मानवीय संवेदनायें नहीं है। प्रकृति में सामंजस्य बैठाने के लिये सभी जीवों का अपना-अपना उचित स्थान है, यदि उस स्थान में परिवर्तन करेंगे तो सन्तुलन बिगड़ेगा जिसे मानव को ही भुगतना पड़ेगा। कबीर द्वारा भी कहा गया है -

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रोंदे मोहे।
एक दिन ऐसा आएगा मैं रोंदूँगी तोहे।।

यहाँ स्पष्ट है कि वर्तमान की परिस्थिति को देखते हुए उपरोक्त लिखे हुए दोहे की प्रासंगिकता स्पष्ट है यहाँ माँटी माने प्रकृति कुम्हार माने मनुष्य अत: इसका आशय है कि प्रकृति मनुष्य से कहती है कि तू मुझे आज जितना रौंद रहा है एक दिन ऐसा आएगा जब प्रकृति तुम्हें रौंदेगी। स्पष्ट है कि इस महामारी को प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा मान सकते हैं।

भारत संस्कृति प्रधान देश है। कई दोहे, कई श्लोक और गीतों आदि के माध्यम से संस्कृति का फैलाव हमने देखा है। भारतीय लोगों में उनके अन्तरात्मा में संस्कृति व संस्कार विशेष जगह रखते हैं।

यदि वर्तमान परिदृश्य को देखें तो चीन के क्षेत्र में जब यह बीमारी फैली तब भी भारत अपनी संस्कृति के अनुसार मदद का हाथ आगे बढ़ाने के लिये तैयार रहा, चीन में व अन्य देशों में फँसे भारतीयों को विशेष विमानों द्वारा भारत बुलाया गया। यह सबकी सुरक्षा का अधिकार हमारी संस्कृति ही देती है।

हमारी संस्कृति कहती है - **किसी को मारकर खाना यह विकृति है, दूसरा अपना खाये आप अपना खायें यह प्रकृति है तथा दूसरा खा सके यह सोचकर खाना यह भारतीय संस्कृति है।**

कोरोना का फैलाव जिस तरह से हुआ उन सभी देशों के लिये भारत में अपनी संस्कृति एवं संस्कार से एक आयना तैयार किया है। हम अपनी संस्कृति एवं संस्कारों को अपनाकर कोरोना पर विजय पा सकते हैं। भारत में नमस्ते की परम्परा एक संस्कार है जिसे सभी देश अपना रहे हैं आज भारतीय संस्कृति को देखकर अन्य सभी देश इसी संस्कृति को अपना रहे हैं। भारत अपनी संस्कृति और संस्कार के कारण विश्व गुरू बन सकता है। वर्तमान समय में जहाँ यह बीमारी अन्य देशों में केस 1 से 1000 होने में 10 दिन लग रहे हैं वहीं भारत में 1 से 100 होने में 10 दिन लग रहे हैं यह एक उपलब्धि है।

भारत ने समय रहते लॉकडाउन का जो फैसला किया यह भारत सरकार की कार्य क्षमता को दर्शाता है। जनता कर्फ्यू व लॉकडाउन यह कोई लिखित आदेश नहीं था। अपितु प्रधानमंत्री जी की अपील मात्र थी जिसे यहाँ के लोगों

ने माना यही संस्कार हैं जिसका पूर्णत: पालन भी किया जा रहा है। इस मुश्किल घड़ी में लोगों की सेवा में लगे डॉक्टर, आई टी क्षेत्र के लोग व अन्य जो अपनी सेवायें दे रहे हैं उनका भी लोगों ने अभिवादन किया। यह भारत की संस्कृति एवं संस्कार हैं इन सेवा क्षेत्र में लगे लोगों का एक ही उद्देश्य है – **नर सेवा नारायण सेवा**

लॉकडाउन व जनता कर्फ्यू, 5 बजे घण्टी बजाना, 9 बजे दीपक जलाना यह भारत की एकता व अखंडता को सुनिश्चित कराता है एवं विश्व को एक भारत, श्रेष्ठ भारत, निरोग भारत का संकेत देता है।

कोरोना के कारण गरीब बेसहारा लोगों का जो दर्द है, सभी जानते हैं ऐसे गरीब बेसहारा लोगों की मदद करने के लिये कई संगठन ABVP, RSS आदि व कर्मचारी संघ सामने आया है जिसने इतनी विपरीत परिस्थितिओं में यह बीड़ा उठाया है। इनके द्वारा भोजन के साथ-साथ आर्थिक मदद भी की जा रही है।

इन लोगों का भाव – **सर्वे भवंतु सुखिनाह सर्वे संतु निरामया का है।** लोग अपने आप को असहाय महसूस न करें इसके लिये राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन दिन रात अपना फर्ज निभा रहे हैं, ये सभी अभिवादन के पात्र हैं। ABVP के कार्यकर्ताओं के द्वारा भी दिन रात ऐसे लोगों की मदद की जा रही है, देश के 10,000 क्षेत्रों में RSS कार्यकर्ताओं द्वारा कमान संभाली गयी है। दवाइयाँ और मास्क भी लोगों को मुफ्त दिया जा रहा है, जनप्रतिनिधियों के द्वारा भी उच्च सहयोग किया जा रहा है, उदाहरण के लिये मारहरा विधानसभा क्षेत्र के जनप्रतिनिधि द्वारा 1,00,000 मास्क का निशुल्क वितरण किया गया जो सराहनीय है। यह सभी हमारे संस्कार व संस्कृति हैं जो हमें इस तरह के कार्य करने के लिये प्रेरित कर रही है। भारत की संस्कृति व संस्कार का विश्व में तेजी से प्रचार-प्रसार हो रहा है, भारत विश्वगुरू बनकर उभरेगा ऐसा विश्वास है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की संस्कृति एवं संस्कारों की प्रासंगिकता स्पष्ट दिखाई देती है। अत: हम की सकते हैं कि संस्कृति एवं संस्कार एक कवच हैं, जिसके द्वारा हम किसी भी युद्ध को जीत सकते हैं।

भारतीय संस्कृति और संस्कार सभी पीड़ित देशों के लिये उदाहरण है, हम सभी अपने अंदर सकारात्मक सोच के साथ इस बीमारी को हराऐंगे।

मैथिलीशरण गुप्त ने भी कहा है कि यह आत्म चिंतन का विषय है कि हम कौन थे और क्या हो गये और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज ये समस्याएं सभी।।

भारत की एकता व अखंडता व बंधुत्व को सुनिश्चित करने वाली संस्कृति व संस्कार इस देश में हमेशा जीवंत रहेंगे।

अंत में एक भारत, श्रेष्ठ भारत, निरोगी भारत की संकल्पना सिद्ध होगी।

-धन्यवाद

मयंक पाराशर
कक्षा- B.Sc.
पता- एटा (उ०प्र०)

2 Role of Indian Defence Forces and Medical Service Provides in Disaster

The 21st century has seen an inreasing number of natural disaster with alarming intensity-the 2001 bhuj earthquake;the 2004 tsunami;the 2005 earthquake in Kashmir;heavy rainfall in Mumbai in 2006 ;the 2008 bihar kosi river flood;the August 2010 cloud burst in keh;the September 2011 sikkim earthquake and ,most recently, in June, the unprecedented flash floods and cloudburst in Garhwal ,parts of kumaon and Nepal, and kinnaur region of himachal pradesh . Each of these disasters has seen the active involvement of the armed forces in the relief operation.

The military's primary task is to guard the nation's borders. In matters domestic, the military is supposed to be a second respondent except in the case of chemical, biological, radiological and nuclear incidence. Theoretically, the principle is "last to enter and first to leave ".However, when theory is matched with practice, this does not seem to be the case. According to the Administrative Reform commission, the military needs to be taken off from the loop of disaster management gradually. While it may sound sensible on paper, it is not really possible in practice. The civil administration is usually not properly geared up for an effective response it needs to be noted that discipline and efficiency is to be the first demand in disaster response and relief tasks,which are often dangerous missions and quite naturally the military brings in order in post - disaster operations whenever there is danger, the military has a constitutional duty to undertake tasks and mission

-Saurabh Saraswat
Prachar Pramukh
ABVP Purvi Nagar, Agra

3 आपदा के समय में भारत के सुरक्षा बलों एवं चिकित्सकीय सेवा प्रदाताओं का योगदान

जैसा कि हम जानते हैं कि जब भी देश में कोई भी आपदा आई है तो सुरक्षा बलों व चिकित्सकीय सेवा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जहाँ भी आपदा आती है सर्वप्रथम मदद के लिये सुरक्षा बलों को तैनात किया जाता है। वह अपनी जान जोखिम में भारत के हर नागरिक को सुरक्षित निकालने का प्रयास करते हैं। तत्पश्चात हमारे चिकित्सक हमारी पूरी मदद करते हैं, हमें स्वस्थ्य रखने में। आपदा के समय इन दोनों के बिना कल्पना करना भी असंभव है "हम बैठे हैं घरों में, वो रास्ते पे खड़ा है, शायद उसका जज्बा उसकी जिंदगी से भी बड़ा है" बेशक उनकी ड्यूटी है हर नागरिक सोचता है, परंतु वे इसे ड्यूटी से ज्यादा जिम्मेदारी समझते हैं, सरकार की जिम्मेदारियों को जिन्हें बखूबी निभाते हैं।

सेना में HADR (Humanitarian Assistance and Disaster Relief) आपदा के समय में हमारी मदद करते हैं "गजब का देश है मेरा या मौत सामने है यह जानते हुए भी लोग फौज की नौकरी नहीं छोड़ते" प्राथमिक उपचार जो कि हमें डॉक्टर से मिलता है, इससे लेकर हमारे जीवन को सुरक्षित करने में डॉक्टर का अहम रोल है। 2013 में उत्तराखण्ड की आपदा शायद आप ना भूले हों, वह मंजर आज भी डरा देता है, हम सब डरे हुए लोगों को बचाने के लिये बस चीख रहे चिल्ला रहे और भगवान को याद कर रहे कि हमें बचाओ और आँखें खुली तो हेलीकॉप्टर से उतरता हुआ, हरी वर्दी में मेरा भगवान आया जिसने हाथ पकड़ उस बहते हुए पानी से बाहर निकाला और फिर सफेद रंग में एक फरिश्ता आया जिसने मुझे जीने के लिये आस दी, मुझे मरने नहीं दिया।

ऐसी बहुत घटनाएं हैं जिनमें सुरक्षाबलों और डॉक्टरों ने लोगों को एक नया जीवन दिया। इनके बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव है। "न ही आरती में और न ही कभी अजान में, मुझे तो ईश्वर दिखता है सफेद कपड़ वाले इंसान में" और अगर इतिहास की यादें धुंधली हो गई हों तो मैं याद दिला दूँ अभी की आज की जहाँ पूरा देश बंद पड़ा हैलोग घरों में हैं ताकि वह सुरक्षित रहें लेकिन इस वक्त भी जहाँ कोई नजर नहीं आता सड़कों पर वहाँ वह वर्दी में खड़े हैं, हमारे लिये। जिन अस्पतालों में मौत का साया है, इस वक्त वहाँ वो डॉक्टर खड़े हैं हमें बचाने के लिये। सलाम है इन फरिश्तों को। "मैंने भगवान नहीं देखा आज डॉक्टर और जवानों से मिलकर यह ख्वाहिश भी पूरी हो गई"

-मयंक तिवारी

कक्षा- D.el.ed

कॉलेज- आदर्श कृष्णा (P.G.) महाविद्यालय, शिकोहाबाद

दायित्व- S.F.D. प्रान्त संयोजक

अभाविप फिरोजाबाद (ब्रज प्रान्त)

4 Message of Nature to Scientifically Well Developed Materialistic World

Nature has music for those who listen it... but this time when skies are more blue than ever, forests having more greenery, air & water are more clear than ever.. still we're listening our own woe and cry of morbidity all over !

COVID-19 has painted entire globe with blues.. no powerful border boaster countries are potentially enough to cease it.. whether its China, USA, Italy or Arab Countries.

Now nature have make us understood that we're celebrating false celebration of being so advanced in science and materialistic world.

"Little we see in Nature that is ours ;We've given our heart away, a sordid boon " -William Words Worth.

Above lines are so apt for present time scenario.. We're too busy and dedicated from numerous decades to make scientifically well developed materialistic World that we stopped to kinder towards our mother nature.We disrupt ecosystem and we shake viruses loose from their natural hosts.When that happen, they need a new host.Often WE are it.

We're just on the top edge of iceberg.Now Pathogens are crossings from animals to human whether its EBOLA, SARS, Bird flu and now Covid-19.. I considere it as very polite message in lieu of what we did to ecosystem... though 48000+ people have died of COVID-19.

We presume us the best among all species, who live on this earth but we forget ***"No one have less or more right in the realm of Nature(God). "***

Albeit mother nature message is costing our lives but I want to give you hope..

"No matter how long the cold, bleak days of winter may continue, winter always turns to spring... this is the law of Nature."

-Nivedita Tikkha
Bareilly College, Bareilly
District- Bareilly

5 वैज्ञानिक भौतिकवादी प्रगतियुक्त विश्व को प्रकृति का एक कठोर संदेश

वृक्षों की लहलहाती टहनियाँ, उन पर चहचहाती चिड़िया व नदीयों की धारा निरुद्ध थी। उनमें ना गंदे नाले बहते थे, ना ही बहती थी आस्था के नाम पर लोगों की बुरी प्रथाएं व इंसान की महत्वाकांक्षाओं का मल। सब कुछ वैसा ही था जैसा प्रकृमि चाहती थी।

फिर दौर बदला, समय बदला और बदला इंसान। शुरू हुई आधुनिकता की होड़ और विनाश का प्रारंभ। इंसान जो प्रकृमि प्रेमी था, जो वृक्षों को ईश्वर, नदियों को माँ और धरती को जननी माना करता था, अब उसका स्वरूप बदला। अब वह वृक्षों को संसाधन, नदियों को ऊर्जा और धरती को अपनी वासना की शांति का साधन समझने लगा। वृक्षों के जंगल काट कंक्रीट के जंगलों की स्थापना की। नदियों की धारा निरुद्ध कर गंदे नालों का वाहक बनाया। जननी धरती अब जंग के साधनों के प्रयोगों का स्थान मात्र बनकर रह गई। वह कहते हैं ना कि मनुष्य की इच्छाओं का अंत नहीं। लेकिन प्रकृति का भी एक नियम है कि वह स्वयं को संतुलित रखती है और ऐसा ही हुआ।

शुरू हुआ संतुलन का दौर और प्रकृति ने इंसान को जो आधुनिकता की होड़ में सब कुछ भूल गया था जवाब देना शुरू किया। जिन्हें काटकर कंक्रीट के जंगल तैयार किये थे परिणाम यह हुआ कि सांस लेना दूभर हो गया। नदियों ने सीमाएं तोड़ी और आधुनिकता के उदाहरण उसकी धारा में खिलौने की तरह बहते दिखाई दिये। धरती जो जननी थी अपने गर्भ से लावा उगलने लगी। इंसान जिसको अपने विज्ञान, संसाधन और आधुनिकता पर घमण्ड हुआ करता था, प्रकृति के सामने बौने साबित होते जा रहे हैं। लेकिन यह अंत नहीं है यह प्रकृति के संतुलन और हिसाब का अभी तो मात्र संकेत है। भविष्य की चेतावनी है कि अभी समय है अपनी भूल को सुधार इंसान बंद करें आधुनिकता की होड़ को अन्यथा परिणाम और भी भीषण होंगे। अब भी समय है कि हमको चाहिये कि प्रकृति की तरफ लौटें और प्रकृति के प्रेमी बनें और जो दर्जा उसे इतिहास में दिया गया था वही दर्जा उसे वापस दें। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब यह विज्ञान और इंसान उत्खनन में प्राप्त होंगे।

-मधुलिका त्रिपाठी

पुत्री श्री अशोक त्रिपाठी

6 कोरोना से युद्ध में आत्मअनुशासन रूपी हथियार : लॉकडाउन

सादर प्रणाम,

जैसा कि हम सब जानते हैं कि दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ कोरोना नामक वायरस आज वैश्विक स्तर पर महामारी घोषित किया जा चुका है। हर तरफ कोरोना का कोहराम मचा हुआ है, ऐसे में इस वायरस को फैलने से रोकने के लिये वैश्विक स्तर पर कदम उठाये जा रहे हैं लेकिन अभी तक इस वायरस के फैलने के मुख्य कारणों का पता नहीं चल सका है और ना ही कोई संभव इलाज मिल पाया है। चीन , इटली, स्पेन, अमेरिका, ईरान, जर्मनी और अब भारत भी इस वायरस के बुरी तरह से पेट में आ गया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चीन से जब यह 12 दूसरे देशों में फैलना शुरू हुआ तो उन देशों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया परिणाम स्वरूप वहाँ (उन देशों में) इस वायरस ने ऐसा आतंक मचाया है (ऐसा तो विश्व युद्ध के दौरान भी नहीं हुआ) कि सक्षम और संपन्न देशों जैसे इटली, फ्रांस व अन्य देशों की स्वास्थ्य सेवाएं भी नाकाम ही नजर आईं। जब तक दूसरे देश इस गंभीर समस्या को समझ पाते तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वहाँ इस महामारी ने लाखों लोगों को अपनी चपेट में ले लिया और ना जाने कितनी जिंदगियों को खत्म कर दिया। जब इस वायरस के लक्षणों का पता चला कि कैसे यह संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है, लोगों ने एक दूसरे से दूरियाँ बनानी शुरू कर दीं, एक दूसरे से मिलना तक बंद कर दिया फिर पता चला कि हम एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर रखें तो काफी हद तक इस वायरस से बचे रह सकते हैं। फिर क्या था चीन के महान शहर पूरी तरह से बंद कर दिये गये जिसे नाम दिया गया लॉकडाउन।

क्या है लॉकडाउन-

लॉकडाउन एक इमरजेंसी व्यवस्था होती है। अगर किसी क्षेत्र या देश में लॉकडाउन हो जाता है तो उस क्षेत्र या देश के लोगों को घरों से निकलने की अनुमति नहीं होती है। जीवन की आवश्यक चीजों जैसे दवा, अनाज, बैंक, अस्पताल के काम, छोटे बच्चों-बुजुर्गों की देखभाल आदि को लाने के लिये बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती है।

क्यों किया जाता है लॉकडाउन-

किसी तरह के खतरे से इंसान और किसी क्षेत्र को बचाने के लिये लॉकडाउन किया जाता है। वैसे कोरोना के संक्रमण को लेकर कई देशों में किया गया है।

कोरोना वायरस का संक्रमण एक दूसरे इंसान में ना हो इसके लिये जरूरी है लोग आत्मानुशासन का पालन कर घरों से कम बाहर निकलें। इसलिये कुछ देशों में लॉकडाउन जैसी स्थिति हो गई है।

किन देशों में है लॉकडाउन-

चीन, इटली, स्पेन, न्यूजीलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया व अन्य देशों में लॉकडाउन जैसी स्थिति है, क्योंकि चीन में सबसे पहले ही कोरोना वायरस की पुष्टि हुई थी। इसलिये सबसे पहले वही लॉकडाउन किया गया। उसके बाद भारत समेत अन्य सभी देशों में लॉकडाउन किया गया।

कब-कब हुआ लॉकडाउन-

- अमेरिका में 9/11 के आतंकी हमले के बाद वहाँ 3 दिन का लॉकडाउन किया गया।
- दिसंबर 2005, न्यू साउथ वेल्स पुलिस फोर्स ने दंगा रोकने के लिये लॉकडाउन किया।
- 19 अप्रैल 2013 में बोस्टन शहर में आतंकियों की खोज के लिये लॉकडाउन किया गया।

लॉकडाउन के दौरान दिशा-निर्देश-

लॉकडाउन के दौरान लोगों को घरों से बाहर नहीं निकलना चाहिये केवल अति आवश्यक कार्य के लिये ही बाहर निकलें। लॉकडाउन होने पर सभी लोगों को घरों में रहकर सरकार व स्वास्थ्य विभागों द्वारा जारी निर्देशों का पालन करना चाहिये तथा दूसरों को भी इसके लिये प्रेरित करना चाहिये। एक अकेले इंसान की चूक भी पूरे देश पर भारी पड़ सकती है।

निष्कर्ष-

लॉकडाउन ही इस वायरस से निपटने का एकमात्र विकल्प है जो अभी तक काफी कारगर साबित हुआ है। अत: भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह लॉकडाउन का पालन करे तथा दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर इस वायरस को फैलने से रोकने के लिये देश की सहायता करें।

अत: सभी को मिलकर समथर्न कर दृढ़ता से पालन कर देश की तरक्की में भागीदार बनना चाहिये। ईश्वर करे जल्द ही इस वायरस से निपटने का कोई मार्ग अवश्य मिल जाए ऐसी हम सभी की कामना है।

हम कोरोना वायरस को मिलकर हरायेंगे क्योंकि यह जिंदगी की पहली रेस होगी जिसमें रुकने वाला जीतेगा।

!! कोरोना हारेगा, देश जीतेगा !!

जय हिन्द, जय भारत

-सादर धन्यवाद

रवि प्रताप सिंह

अभाविप रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय

बरेली

7 देश दुनिया की आपदाओं के समय ABVP कार्यकर्ताओं की भूमिका

जाति पंथ भाषा भेष-भूषा प्रान्त आदि मुद्दों पर बैठे हुए समाज को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य इस प्रेरणा से 9 जुलाई 1949 को स्थापित हुआ। युवाओं एवं छात्रों को संस्कारित एवं ध्येय निष्ठ बनाने का महायज्ञ ज्ञानशील एकता के सूत्रों से देश को सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने का माध्यम अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद है।

परिषद अपने शुरूआती दौर से ही छात्रों में, युवाओं में शिक्षा के लिये एवं जीवन वतन के लिये तथा पढ़ाई के साथ लड़ाई यह भाव जाग्रत करता रहा है। जब परिषद का कार्यकर्ता कहता है कि छात्र कल का नहीं अपितु आज का नागरिक है तो उसे इस वाक्य के साथ अपना राष्ट्र कर्तव्य का भी बोध रहता है। इसी वाक्य का स्मरण रखते हुये जब राष्ट्रपति आपदा आयी तब तक परिषद के कार्यकर्ताओं ने इस चुनौती को आगे बढ़कर स्वीकार किया है, चाहे गोवा मुक्ति संग्राम रहा हो यहाँ आपात काल के समय छात्रों द्वारा विशाल आन्दोलन खड़ा किया गया हो, जब गुजरात में इस छात्र आन्दोलन की लहर उठी और बिहार में इस आन्दोलन ने अपना दम दिखाया और देखते ही देखते इस लहर में कई संगठन एवं राजनीतिक दल भी शामिल हुए एवं परिणाम स्वरूप आपातकाल उखाड़ फैंका गया। इस आन्दोलन में अग्रणी होने के बावजूद भी परिषद राज्य नहीं समाज बदलना है कि उद्देश्य से परिषद फिर अपने काम में जुट गया। जब जब नक्सली एवं आतंकी शक्तियों ने कैम्पस में डेरा जमाने का प्रयास किया तब वहाँ परिषद का कार्य पहुँचा, आतंकी बाहर फैंके गये। आंध्र प्रदेश में जब नक्सली गरीबी के उत्थान के नाम पर छात्रों को उकसाकर आतंकी बनाने में लगे तो परिषद के जावांज कार्यकर्ताओं को नक्सलियों के खिलाफ हुए संघर्ष में अपनी जान तक का बलिदान देना पड़ा। आज ही परिषद के कार्यकर्ता अपने रमन्ना गोपन्ना जितेन्द्र रेड्डी सरी के कार्यकर्ताओं का बलिदान हृदय में संजोकर सदैव राष्ट्रसेवा के लिये प्रेरित होते रहे हैं। 1983 में असम बचाने को गये हजारों छात्रों ने असम बचाओ आन्दोलन में पुलिस की लाठियाँ झेली और अपना खून बहाया। इसी प्रकार 1990 में श्रीनगर के लाल चौक पर जब तिरंगे का अपमान किया जा रहा था तब परिषद के हजारों कार्यकर्ता जान की परवाह किये बिना तिरंगा फहराने श्रीनगर को निकल पड़े किन्तु सरकार के कहने पर पुलिस ने उन्हें ऊधमपुर से गिरफ्तार कर वापस भेज दिया। परिषद के कार्यकर्ता सदैव कर्मण्येवाधिरस्ते मा फलेषु कदाचन का सूत्र आत्मसात करते हुए सदैव सच्चे राष्ट्र पहरी के रूप में रहे हैं।

2004 में जब सुनामी आयी तब हजारों कार्यकर्ता प्रभावित क्षेत्रों में उतर कर सहायता कार्य में लग गये तथा देश के कोने कोने में परिषद के कार्यकर्ताओं ने घर-घर, गली- गली, मौहल्ले-मौहल्ले जाकर धन, वस्त्र, अन्न संग्रह कर प्रभावित क्षेत्रों में भिजवाया। लातूर भुज, गुजरात भूकंप, आंध्र प्रदेश एवं बिहार के नैसर्गिक विपदा में परिषद कार्यकर्ताओं की मदद करें। इतिहास हमेशा याद रखेगा, इस सेवा कार्य में परिषद के कार्यकर्ताओं ने देश के सभी

हिस्सों से समाज से धन, वस्त्र एवं अन्न आदि का संग्रह कर प्रभावित क्षेत्रों में भिजवाया। अभी पिछले ही वर्ष उड़ीसा में आए सैनी तूफान में पीड़ितों की मदद के लिये परिषद कार्यकर्ता चाहे बरेली या आगरा हो या कहिये सम्पूर्ण बृज प्रान्त या भारत में संग्रह कर सहायता पहुँचायी। अभी जिस प्रकार कोविड-19 वायरस का दंश पूरी दुनिया झेल रही है। इस दौरान लॉकडाउन के समय जब पूरे देश में एक अजीब सी भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई एवं गरीब मजदूर वर्ग का बड़े शहरों से पलायन शुरू हो गया तब परिषद के कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह राहत एवं सहायता कैंप लगाकर प्रभावित लोगों को भोजन बाँटना रहा हो। एक गाँव-गली, मौहल्लों को सैनेटाइज कराने का कार्य हो या फिर गरीब बस्तियों में जाकर बेसहारा लोगों को अनाज का वितरण करना रहा हो आदि कार्यों से परिषद के कार्यकर्ताओं ने समाज के प्रति अपनी संवेदनशीलता दिखाते हुए अपनी जिम्मेदारी निभाई। मुझे स्वयं एक चित्र देखकर एहसास हुआ कि जब बरेली के एक छोटे से नगर भोजीपुरा इकाई के कार्यकर्ता अपने गाँव को स्वयं सैनेटाइज करने का बीड़ा उठाते हैं तब उनके अंदर परिषद के द्वारा दिये गये समाज को अपना एक अभिन्न अंग मानने के गुण साफ प्रदर्शित होते हैं। जब युवा वर्ग संपूर्ण देश को अपना परिवार समझने लगे तब इस राष्ट्र का उत्थान कोई नहीं रोक सकता। बस आवश्यकता है उसे सही दिशा देने की ।

भारत माता की जय!
वंदे मातरम्!!

-आशुतोष गौड़
शिक्षा- M.A. (राजनीति शास्त्र)
नगर मंत्री, भोजीपुरा इकाई
अभाविप बरेली (ब्रज प्रान्त)

8 कोरोना के खिलाफ युद्ध में मेरी जिम्मेदारी

तो जैसी कि आज हम सभी जानते हैं कि इस समय संपूर्ण विश्व कोरोना के खिलाफ जंग लड़ रहा है। इसी कड़ी में हमारे प्रधानमंत्री जी ने भी भारत में इस महामारी को खत्म करने के लिये कई गंभीर कदम उठाए हैं। भारत को पूर्ण रूप से लॉकडाउन कर दिया गया है। तो क्या ऐसे परिस्थिति में हमें अपने आप से ये नहीं पूछना चाहिये कि कोरोना के खिलाफ इस युद्ध में मेरी क्या भूमिका है? क्या इस समय हमें अपने समाज, अपने देश व संपूर्ण मानव प्रजाति के साथ नहीं खड़ा होना चाहिये? हाँ इन सब प्रश्नों के उत्तर हमें अपने अंतर्मन में खोजने चाहिये।

ऐसी विषम परिस्थितियों में हमें अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिये। पर एक प्रश्न फिर उठता है कि इस समय हमारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं? तो इस समय मेरी या हम सबकी ये जिम्मेदारी होनी चाहिये कि हम सरकार द्वारा दिये गये दिशा-निर्देशों का पालन करें। अपने आस-पास के जरूरतमंद लोगों को आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करायें। सोशल मीडिया पर फैल रही अफवाहों पर अंकुश लगाने का प्रयास करें।

इस जंग में हमें अपने घरों में ही रहकर सरकार व प्रशासन का सहयोग करना चाहिये। अत: मैं अपनी कविता के साथ सबकी मंगलकामना की आशा करता हूँ कि हम सब मिलकर जल्द ही इस महामारी से जीत जायेंगे।

घर की खिड़की से।
अपनी नजरों में ही आसमान कैद कर लो।।

उगता सूरज, ढलती शाम देख लो।
चाँद तारों से सजी रातें देख लो।।

जिन गलियों में रही सदा चहल-पहल।
आज उन्हें सूनी भी देख लो।।

और अगर हो खुश किस्मत गाँव के।
तो दूर तक खेतों में लहलहाती सोने की फसल देख लो।।

माँ के हाथों से बनता स्वाद देख लो।
जितना आँखों में बसा सको वो सब देख लो।।

बस एक गुजारिश है कि घर से न निकलो।
क्या पता गलती से तुम किसी की जान ले लो।।

-भगवानदास धनगर
B.Com (द्वितीय वर्ष)
B.S.A. कॉलेज, मथुरा
मथुरा (उ०प्र०)

9 My Experience and Responsibilities in the Time of Lockdown

At this time the whole world is going through a very serious problem, the problem is such that no country can help any country in the time of this calamity because the whole world is suffering from this terrible and devastating pandemic. When every country is trying to protect the survival and integrity of its own from this deadly disease named COVID-19 on the strength of its limited resources, then as a resident of a civilized country, the duties and values of all our citizens are tested. And then all of us citizens should unite and observe our civilization, culture, education, liveliness, and beauty for the safety of our country so that the world can take inspiration from us even in the most adverse conditions and can tell the coming generations about India more proudly.

Some points are given below in which we can understand our experience and responsibilities at this time.

Responsibilities:

To be a 'Good Citizen'

The good or bad of a country is in the hands of the citizens of that country. As good citizens of the country, it is our duty to follow the various orders issued by the government with utmost loyalty and inspire others to do the same.

To 'Help the Needy'

Human religion is our next responsibility. Many laborers and poor families have become helpless at this time. Due to lockdown, all of them are hardly able to take care of their families. In such a situation, it becomes our responsibility that we extend a helping hand to them.

Experiences:

To 'Respect the Mother Nature'

Recently, I experienced how Mother Nature was angry with us, which she showed to human civilization on this doom's day. When human has hurt nature, then nature has taught human a lesson in his own way. I believe that whatever is happening in the form of the pandemic with human civilization at present is a lesson taught by nature. Humans should never forget that nature from which we have emerged is also capable of destroying us.

-Shivangi Garg
M.A. Sociology (Final Year)
ISS, DBRAU, Agra
Agra (U.P.)

10 Role of Media and Social Media in Lockdown

Market research firm nielsen said," Social media volume saw a whopping 50x surge between January and March in India in the wake of COVID - 19 pandemic!!"

A senior official of the firm noted that social media buzz picked up from 0.4 million in January and 1.6 million in fabrury to a staggering 20.3 million till march 24.The number reportedly spiked simultaneously as corona virus cases jumped from just one in January to the over 1500 cases of CORONA till now. Each time our PM Modi addressed the nation make announcements such as JANTA CURFEW and 21 day total lockdown in March, social media volume noted a jump.

Celebrities, cricketers, poticians and social organizations like RSS, ABVP and manny other NGO's are urging people to follow the lockdown and five minute gratitude showing on Janta curfew day were other instances, "Said Prasun Bases, South Asia zone president of Nielsen global connect told newspersons in a virtual briefing call to newspersons.

With limited activity out of home, Indians are reportedly reading contribution and influening on social media.

According to Nielsen, the total volume of covid -19 related conversations reached 22.3 millions by March 24 in the country.

So, we can't avoid the contribution of media and social media in following lockdown and spreading awareness among the people. But, some of the people are sharing and supporting fake news and informations which is very shameful and bad during this situation in the world. But, our media and most of the good people are spreading awareness among our Indian People.

Social media buzz notably began buzzing mid January with initial news of the outbreak of novel coronavirus in Wuhan district of China. Pandemic updates followed by compaigns such as karo Namaste, use of hand sanitiser and masks to safe hands challenge were also noted as triggers for social media uptick during the restricted living imposed during early March.

So, we can say that the media and social media has a big role in the lockdown.But, we'll have to beware of anti-social elements of our society who are spreading fake informations and provoking people.

Abvp and me, also appeal to you all to please follow the lockdown and stay at home. This is not only good for your health, but also good for your family, your society and your country.

-Thakur Rajat Pratap Singh

B.B.A.

Invertis University, Bareilly

ABVP Bareilly Mahanagar

11 लॉकडाउन प्रबंधन में सोशल मीडिया और मीडिया का योगदान

कोरोना वायरस के कारण देश में लॉकडाउन लागू किया हुआ है। लोग अपने घरों में बंद हैं। इस दौरान लोग ज्यादा समय सोशल मीडिया पर खर्च कर रहे हैं। इंटरनेट और टीवी बच्चों से लेकर युवाओं के लिए मनोरंजन का एकमात्र जरिया बन चुका है। एक ताजा सर्वे में सामने आया है कि भारत में लॉकडाउन के चलते सोशल मीडिया के इस्तेमाल में 87 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा इंटरनेट ब्राउजिंग में भी तेजी से इजाफा हुआ है।कोरोना वायर के कारण देश में लॉकडाउन लागू किया हुआ है। लोग अपने घरों में बंद हैं। इस दौरान लोग ज्यादा समय सोशल मीडिया पर खर्च कर रहे हैं।

सुबह से रात तक लोग सोशल मीडिया से लेकर टीवी पर वक्त गुजार रहे हैं। लॉकडाउन के चलते नॉन.प्राइम टाइम के समय भी दर्शकों की संख्या में इजाफा देखा गया है। इंटरनेट और टीवी बच्चों से लेकर युवाओं के लिए मनोरंजन का एकमात्र जरिया बन चुका है। एक ताजा सर्वे में सामने आया है कि भारत में लॉकडाउन के चलते सोशल मीडिया के इस्तेमाल में 87 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा इंटरनेट ब्राउजिंग में भी तेजी से इजाफा हुआ है।

150 मिनट से बढ़कर 280 मिनट हुआ यूजहैमरकॉफ कंज्यूमर स्नैपशॉट की ओर से किए गए सर्वे के मुताबिक भारत में फेसबुकए वॉट्सऐप औप ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का यूज 150 मिनट से बढ़कर 280 मिनट हुआ है। यानीं कि इस समय रोजाना लोग औसतन 4 घंटे से भी ज्यादा समय सोशल मीडियो प्लेटफॉर्म पर बीता रहे हैं। सर्वे के मुताबिक लॉकडाउन के पहले सप्ताह में यूजर्स ने हर दिन 280 मिनट ज्यादा खर्च किएए जो लॉकडाउन से पहले वाले सप्ताह की तुलना में 87 फीसदी ज्यादा है।

इसके अलावा वीडियो स्ट्रीमिंग और टीवी देखने वालों की संख्या भी दोगुनी हुई है। हालांकिए रेडियो सुनने वालों की संख्या में गिरावट देखी गई है। सर्वे के दौरान लोगों ने बताया कि लॉकडाउन में कोरोना की ताजा अपडेट लेने और फैमिली और फ्रेंड्स से जुड़े रहने के लिए ज्यादा सोशल मीडिया को काम में लेते है।

1300 यूजर्स के बीच हुआ सर्वेहैमरकॉफ कंज्यूमर स्नैपशॉट ने दिल्लीए मुंबईए बेंगलुरु और चेन्नई में 1300 लोगों के बीच सर्वे किया। सोशल मीडिया के साथ टीवी दर्शकों की संख्या में 71 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। मजे की बात है कि जहां रात 10 बजे से 12 प्राइम टाइम होता था। अब वह शाम 7 बजे से ही शुरू हो जाता है। लोगों ने यह भी कहा कि अब वे सुबह 8 बजे से टीवी देखना शुरू कर देते हैं ।

–जान्हवी शर्मा

धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़

12 कोरोना से राष्ट्र की रक्षा हेतु जागरुकता अभियान में एबीवीपी कार्यकर्ताओं की भूमिका

कोरोना नामक विषाणु से जनित इस बीमारी जो पंक्षियों के आर.एन.ए. से निकल कर मानव के शरीर में प्रवेश कर गई और उसने चीन के वुहान शहर के सीमित क्षेत्रों से निकलकर आज विश्व के सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। इस अदृश्य मानवता के शत्रु विषाणु को हमने आँखों से तो नहीं देखा परन्तु इसकी तबाही को सर्वत्र ओर देखने को हम मजबूर हैं। हम देखते हैं कि इसने सीमाओं का भेद नहीं किया, इसने महाद्वीपों का अन्तर नहीं समझा, इसने जाति धर्म संस्कृति इसका अन्तर नहीं समझा और पूरे के पूरे मानव समाज को उसके अस्तित्व को चुनौती दी है और बहुत बड़ी क्षति विश्व युद्धों के बाद मानव जीवन को दी है। लगता है कि इसका कोई सफल इलाज अभी हाल फिलहाल में मानव प्रजाति के पास नहीं है। तमाम वैज्ञानिक शोधार्थी इस बीमारी के टीके को बनाने के लिये विश्वभर में प्रयास रत हैं परन्तु अभी जो उपाय समझ में आया सभी को वह है कि मानव मानव से एक दूरी बनाकर रखे कोई भी सम्पर्क एक दूसरे से शारीरिक रूप से हम ना करें। सोशल डिस्टेंशिंग नामक शब्द भी आजकल चर्चाओं में है। छींकने और हवा के द्वारा इसके प्रसार के कारण प्रत्येक व्यक्ति हो अपने घर में सुरक्षित रहने की सलाह दी गई क्योंकि दवा नहीं है इसलिये बचाव की यहाँ औषधि और दवाई बनकर पूरे विश्व को इस महामारी से बचा सकता है। बचाव के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए उन्हें यह बताने के लिये कि बचाव की प्रासंगिकता क्या है। मीडिया, सोशल मीडिया, सरकारी और गैर सरकारी उपक्रम इसमें जुटे हुये हैं परन्तु सदा की भाँति अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अनेक आयाम जिनमें से शोध के ऊपर भी हमारे आयाम हैं। उन्होंने इस बीमारी की चीन में फैलने की दर से अनुमान लगाकर समय पूर्व ही अपने सभी विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इकाईयों में पूरे ब्रज प्रान्त के अन्दर छोटे छोटे पोस्टर व्हाट्सऐप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म से इस बीमारी से बचने के लिये जरूरी कदमों की जानकारी घर-घर तक पहुँचाई। ऐसे समय में जब भारत की जनसंख्या विश्व में लगभग सबसे ज्यादा होने वाली है तब इस महामारी को रोकने में विद्यार्थी परिषद का समय पूर्व आंकलन और जागरण अभियान भारत के लिये बहुत ही सुखदायक रहा।

भारत में सरकारी रूप से लोग उनकी स्थिति होने पर विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने फोन पर मैसेज, ई-मेल, ट्वीट और फोन कॉल्स के माध्यम से लोगों को घरों में रहने के लिये प्रार्थना की उसके बाद घरों में लॉकडाउन का समय सकारात्मकता को बढ़ायें। इसकी चिन्ता भी समय पूर्व कर ली गयी और बड़ी कुशलता से विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने सोशल मीडिया को हथियार बनाकर लेखन, फिटनेस और इत्यादि अन्य कार्यों को चेलेन्ज की तरह युवाओं के बीच में प्रेसित किया और विभिन्न हमारी सम्बन्धित विषयों पर आलेख आमंत्रित किया। इससे घर में बैठे युवा शक्ति को एक सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिली। उनकी ऊर्जाओं का सद्पयोग हुआ और उनके सुन्दर लेखों का संग्रहण एक किताब के माध्यम से करने का जो संकल्प विद्यार्थी परिषद ने लिया था। उसे पूर्ण करने में सभी लोग व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से जुड़ गये, लग ही नहीं रहा था कि घरों में लगातार बोर होने के मैसेज एक दूसरे को प्रेषित करने वाले समाज के बीच में कुछ युवा ऐसा भी उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। अनेक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों के बच्चों ने, शिक्षकों ने और विद्यार्थियों ने इस में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। विद्यार्थी परिषद ने जनता कर्फ्यू के दौरान भी प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी की बातों का अनुपालन करते हुये जनता कर्फ्यू को सफलता के आयामों तक पहुँचाया।

विद्यार्थी परिषद लगातार ही कोरोना महामारी से संघर्षरत अपने देश भारत की सहायता हेतु हर जगह सुंदर तरीके से खड़ा हुआ है और अनेक सेवा कार्यों में भी अपना योगदान दे रहा है। लॉकडाउन की सूचना के बाद पलायन की समस्या से जूझते दिहाड़ी मजदूरों के लिये भी विद्यार्थी परिषद ने अनेकों सेवा करके ऐसे दिहाड़ी मजदूरों की स्वच्छता, स्वास्थ्य और भोजन की व्यवस्था विभिन्न स्थानों पर पुलिस प्रशासन के माध्यम से कराई। अपने-अपने घरों से भोजन के पैकेट बनाकर विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने पुलिस प्रशासन को दिये और जरूरत मन्दों तक भोजन राशन पहुँचाने की उचिज व्यवस्था की। विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने सोशल डिस्टेंसिंग का एक नायाब उदाहरण भी प्रस्तुत किया। संगठन स्तर पर संगठन मंत्रियों ने व्हाट्सएप, गूगल और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म का प्रयोग बैठकों के लिये किया और व्हाट्सएप के माध्यम से सभी कार्यकर्ताओं से सम्पर्क सुनिश्चित किया। कार्यालय से ही संगठन मंत्री स्तर पर सभी को दिशा निर्देश समय-समय पर जारी होते रहे और कार्यकर्ताओं में जो उसका प्रभावी कार्यालय एक छोटे से अक्षय से प्रवाहित होता रहा। कोरोना जैसी महामारी जितनी गम्भीर और ताकतवर है विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं का मनोबल भी उतना ही ताकतवर है। हम पूर्ण मनोयोग से इस महामारी को हरायेंगे ऐसा संकल्प प्रत्येक विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ता लेता है। विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं के जागरूकता अभियान प्रशासन को सहयोग और सेवाकार्य के कारण आज समाज कोरोना की आपदा से भली भाँति लड़ रहा है। लगता है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे विद्यार्थी संगठनों की दृढ़ इच्छा शक्ति इस भयानक संकट को हरा कर ही दम लेगी।

-उमा शर्मा

परास्नातक(इतिहास)

आगरा (उ०प्र०)

13 सकारात्मक सोच एवं सकारात्मक रवैये से जीतेगा भारत

बन्धुवर नमस्कार,

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ब्रज प्रान्त की पहल **"आपदा, विश्व और भारत की संस्कृति"** आलेख निमंत्रण में अपनी सहभागिता हेतु **सकारात्मक सोच एवं सकारात्मक रवैये से जीतेगा भारत** इस विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करता हूँ।

बन्धुवर जैसा कि हम सभी जानते हैं कि देश ही नहीं परन्तु समूचा विश्व इस समय एक भयंकर आपदा से जूझ रहा है, यह आपदा एक बड़ी महामारी का रूप धारण कर चुकी है और यह महामारी है कोरोना वायरस या कोविड-19, यह बीमारी नवम्बर सन् 2019 में सर्व प्रथम चाइना के वुहान शहर से शुरू होकर आज पूरे विश्व में हाहाकार मचा रही है। कई देश इस महामारी से जंग में हार रहे हैं और कुछ लड़ रहे हैं। अब यह बीमारी अपने पूरे आवेश के साथ भारत में दस्तक कर चुकी है। ऐसे में अगर हम बात करें कि विश्व के अन्य इतने बलशाली देश जोकि तकनीकि में, अर्थव्यवस्था में, संसाधनों में बहुत आगे हैं परन्तु वह भी इस महामारी से लड़ाई में विफल हो रहे हैं। इसका मेरे अनुसार सिर्फ और सिर्फ एक ही कारण है वहाँ के लोगों का सरकार और देश के प्रति सकारात्मक रवैया न होना।

ऐसे में हम बात करें कि सकारात्मक रवैया या सकारात्मक सोच क्या होनी चाहिये तो ध्यान में आएगा कि जिन देशों में यह महामारी अपना रौद्र रूप धारण कर चुकी थी वहाँ पर सरकार द्वारा प्रजा को लॉकडाउन या घर पर रहने की हिदायत दी गई, तभी वह इस महामारी को फैलने से रोकने में कुछ हद तक कामयाब रहे।

जब हम बात करते हैं भारत देश की तो भारत देश में अभी इसका आंकड़ा अन्य विकसित देशों के मुकाबले बहुत कम है और ऐसे में भारत के श्री नरेन्द्र मोदी जी की केन्द्र सरकार द्वारा समूचे भारत में 21 दिन का लॉकडाउन करने की घोषणा की है। बन्धुवर ऐसे में यह हम सभी का मौलिक कर्तव्य होता है कि इस संकट की घड़ी में हम सरकार के और देश के प्रति एक सकारात्मक सोच रखें।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हाथ जोड़कर जनता से अपील की कि कृपया 21 दिन घर पर रहकर इस बीमारी से लड़ाई करें क्योंकि **जान है तो जहान है।** ऐसे में हम देखते हैं कि सरकार का कितना सकारात्मक रवैया रहा होगा ? क्योंकि यह बात सरकार भी जानती थी और आम जनता भी जानती है कि 21 दिन का लॉकडाउन भारत की अर्थव्यवस्था को डगमगा देगा, लेकिन भारत सरकार ने एक सोच के साथ कि देश के लोग हैं तो देश है, इस निर्णय को लिया। सरकार के लिये भी यह निर्णय आसान रहा क्योंकि लाखों करोड़ों का एक नया खर्चा सरकार के ऊपर आने वाला था। लेकिन उसकी परवाह किये बिना सरकार ने यह निर्णय लिया।

अब ऐसे में बात आती है भारत की आम जनता के सकारात्मक सोच एवं सकारात्मक रवैये की, कि भारत के लिये कोरोना से लड़ने के लिये सकारात्मक सोच केवल और केवल यही है कि सरकार के इस फैसले का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण जोर समर्थन करें एवं अपने घर पर रहकर सरकार को इस महामारी से लड़ने में बल प्रदान करें। प्रत्येक व्यक्ति जो भी इस देश का नागरिक है उसे सरकार की और इस देश की ऐसी विषम परिस्थितियों में जितना सम्भव हो मदद करने का भाव रखना चाहिये। क्योंकि सभी कार्य सरकार अकेले नहीं कर सकती, उसके लिये जनता का साथ भी उतना ही आवश्यक है।

सभी जानते हैं कि भारतीय संस्कृति और भारतीय विरासत हमेशा से ही पूरे विश्व के लिये एक सकारात्मक दिशा निर्देश देती आई है। ऐसे में पूरा विश्व भारत की ओर आस भरी निगाहों से देख रहा है, तब हम सभी का यह कर्तव्य होता है कि हम पूरे विश्व को एक बार पुन: भारत का सन्देश दें। कि भारत चाहे तो अपने दृढ़ निश्चय से और अपनी सकारात्मक ऊर्जा से किसी भी चुनौती का सामना करने के लिये एक जुट होकर खड़ा है।

एक और बड़ी चुनौती का इस लॉकडाउन के समय में भारत को सामना करना पड़ेगा जो है असहाय लोगों की भूख! जी हाँ भारत देश 135 करोड़ जनसंख्या वाला देश है और इसमें से अधिकांश ऐसे लोग हैं जो प्रतिदिन अपने भरण पोषण के लिये काम करते हैं और अपनी भूख शांत करते हैं। ऐसे में जब लम्बे समय तक उन्हें कोई काम नहीं मिलेगा तब समस्या आती है कि कोई भी व्यक्ति भूखा ना सोये और इस महामारी से जंग में भारत हार न जाये, इसके लिये शासन प्रशासन भी कड़ी मेहनत से कार्य कर रहा है लेकिन यह हमारा भी कर्तव्य होता है कि घर पर रह कर हम प्रशासन की और अपने आसपास रह रहे असहाय लोगों की हर सम्भव मदद करने के लिये तैयार रहें।

सभी लोग अच्छे मन से एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से घर रह कर सरकार के इस फैसले का पालन करें, समर्थन करें और इसकी भी चिन्ता करें कि कोई भी व्यक्ति भारत में भूखा न सोये। क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो भारत कोरोना से इस जंग में हार जायेगा। ऐसे समय में यही हमारा सकारात्मक रवैया है कि हर सम्भव मदद हम देश लोगों की और सरकार की करें। इसी सकारात्मक सोच और देश के प्रति सकारात्मक रवैये से ही भारत कोरोना से इस जंग में अवश्य ही जीतेगा। जय हिन्द, जय भारत।

-शशांक अग्रवाल

जिला संयोजक

अभाविप मथुरा (ब्रज प्रान्त)

14 लॉकडाउन के समय का सदुपयोग को पुस्तकों से समाज को जोड़ने के लिये एबीवीपी की सकारात्मक पहल

क्या होगा यदि दलाईलामा आपको जीवन जीने के तरीके बतायें ? क्या होगा यदि कोई सोशल कनैक्टिंग ऐप बनाने में मार्क जुकरबर्ग आपके पार्टनर हों ? क्या होगा यदि वोरेन वफेट आपको मनीइनवैस्टमेंट करना सिखायें ? क्या होगा यदि आपको आध्यात्मिक पथ स्वयं स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा मार्ग दर्शित किया जाये ?

हाँ ! आपकी सफलता शतप्रतिशत कहीं ज्यादा होगी इसमें कोई संदेह नहीं है। माना यह व्यवहारिक रूप से सम्भव नहीं है। कि उपरोक्त सभी हमारे व्यक्तिगत शिक्षक या मार्गदर्शक बने पर उनके जीवन, आचरण, विचार, दृष्टिकोण, गलतियाँ, निष्कर्ष को किताबों के माध्यम से पढ़कर आत्मसात करके न सिर्फ हम अपने को बल्कि समाज में सुधार ला सकते हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा इस लॉकडाउन के समय के सद्पयोग के लिये पुस्तकों द्वारा समाज को जोड़ने के पहल न सिर्फ सकारात्मक बल्कि जीवन को नया दृष्टिकोण देती है। किसी ने सच ही कहा है कि "अच्छी पुस्तक एक अच्छे समाज की जन्मदात्री होती है।" आज के समय में मैट्रो की गति से तेज चलने वाली दुनियाँ जो हमेशा इलैक्ट्रॉनिक्स से घिरी रहती है। उसके लिये पुस्तक इस लॉकडाउन में किसी सैर सपाटे से कम नहीं है।

जी हाँ आप पुस्तक पढ़ते हैं तब ना सिर्फ व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष से चित परिचित होते हैं बल्कि आप पुरातन समाज, नवीन समाज या फिर भविष्य में कहीं ना कहीं जुड़ते हैं। पुस्तकें एक माध्यम होती हैं जहाँ वैश्विक स्तर तक के समाज को जोड़ सकते हैं। वर्तमान समय में युवाओं, खासकर टिकटॉकर्स में प्रचलित ऊटपटांग चुनौतिओं से उत्कृष्ट मुझे अपने दोस्तों को एबीवीपी की इस पहल को चुनौती के रूप में देना अच्छा लगा। मैंने "योग वशिष्ट" जी की महारामायण का अध्ययन किया। ना सिर्फ हमने महापुरुषों की जीवनी को पढ़ा इसके अन्यत्र श्रीमदभगवतगीता, गाँधी जी के सत्य के प्रयोग जैसी पुस्तकों का अध्ययन करा। हमने आपस में व अपने परिवार में भिन्न-भिन्न प्रकार के सुविचारों का आदान प्रदान करा। इसके लिये में सभी सदस्यों का धन्यवाद करना चाहूँगा।

मैं आशा करता हूँ भविष्य में भी ABVP के साथ जुड़कर इसी प्रकार भारतवर्ष के समाज सुधारी कार्यों में अग्रणी रहूँगा।

-उज्ज्वल ढाका

इकाई अध्यक्ष

महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

अभाविप बरेली (ब्रज प्रान्त)

15 कोरोना से अर्थव्यवस्थाओं पर प्रहार: एक गंभीर चुनौती

विश्व में तेजी से फैल रहे घातक कोरोना वायरस ने वैश्विक अर्थ व्यवस्था को पूर्ण रूप से प्रभावित किया है। लैटिन भाषा में कोरोना का अर्थ मुकुट होता है, वायरस के कणों इर्द-गिर्द उभरे काँटे जैसा ढाँचा इलैक्ट्रोन सूक्ष्मदर्शी में मुकुट जैसा प्रतीत होने के कारण इसका नाम कोरोना रखा गया था। अभी हाल में इसको विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड-19 नाम दिया है। इस वायरस से आज विश्व के लगभग 203 देश पूर्ण रूप से प्रभावित हैं। विश्व में भारत सहित 15 देशों की अर्थ व्यवस्थायें अरबों रुपये का नुकसान उठा चुकी हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत के व्यापार पर 348 मिलियन डॉलर का प्रभाव पड़ने की सम्भावना है, साथ ही सर्वाधिक नुकसान चीन को होने का अनुमान है।

कोरोना मामलों में तेजी के साथ बढ़ते ग्राफ के कारण दो माह पूर्व उच्चतम स्तर पर रहने वाला स्टॉक मार्केट 20 प्रतिशत से ज्यादा गिरावट दर्ज कर चुका है। कोरोना से सर्वाधिक प्रभावित होने वाले सैक्टरों में विमान तथा पर्यटन हैं। जिसमें लगभग 5 लाख से ज्यादा कर्मचारियों के प्रभावित होने की सम्भावना है। असंगठित क्षेत्र लगभग 10 से 15 करोड़ कर्मचारियों के भारत में प्रभावित होने की सम्भावना है।

गोल्डमैन सैच्स की फरवरी 2020 में जारी रिपोर्ट के अनुसार चीन में फरवरी माह में उत्पादन और गैर उत्पादन गतिविधियों में ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गयी है। जेपी मार्गन रिपोर्ट में डॉ० केली ने कहा कि सामाजिक स्तर पर पूर्ण रूप से दूर रहने के प्रभाव 2020 के दूसरे क्वार्टर में परिलक्षित होना ही है, इसके अनुसार सोशल डिस्टैंसिंग के बाद समुद्री पर्यटन, एयर लाइन्स, होटल, कैसीनो, खेल कार्यक्रम, मूवीज, रैस्तरां व्यवसाय आदि उद्योगों पर कोरोना का कहर पड़ना निश्चित है।

एशियन विकास बैंक के अनुसार कोरोना से विश्व की अर्थ व्यवस्था को 77 बिलियन डॉलर से 347 बिलियन डॉलर अर्थात वैश्विक जीडीपी का 1 प्रतिशित से 4 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। कोविड-19 महामारी वैश्विक आपूर्ति चेन और विश्व व्यापार को प्रभावित कर रही है। इस दौरान 100 देशों की सीमाओं के बन्द हो जाने से पर्यटन में भी ठहराव आ गया है। वायरस प्रकोप से संयुक्त राष्ट्र की व्यापार और विकास एजेन्सी अन्कटाड ने वैश्विक अर्थ व्यवस्था में 2000 अरब डॉलर लगभग 1,40,000 करोड़ रुपये का नुकसान होने का अनुमान लगाया है। मुख्य रूप से विश्व की सर्वाधिक कोरोना से प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं में यूरोपीय संघ 15.6 बिलियन डॉलर, यूएसए 6 बिलियन डॉलर, जापान 5.2 बिलियन डॉलर, द०कोरिया 3.8 बिलियन डॉलर, चीन के ताइवान 2.6 अरब डॉलर, वियतनाम 2.3 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्थायें हैं।

वैश्विक स्तर पर विश्लेषकों का मानना है अमेरिका और चीन के साथ 150 अरब डॉलर (10 लाख करोड़ रुपये) से अधिक का व्यवसाय करने वाला भारत इस आर्थिक मंदी से अछूता नहीं रहेगा। कोरोना को लेकर अमेरिका में एलर्ट जारी है साथ ही इराक, इटली, स्पेन, फ्रांस सहित कई अन्य देशों में भी लॉकडाउन लगाया गया है। कोरोना

वायरस से प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक रूप से मंदी में जाने से रोकने के लिए विशेष आर्थिक पैकेज देने पर सरकारें विचार कर रहीं हैं जिसके अन्तर्गत भारत सरकार ने 1.70 करोड़ रुपये का पैकेज घोषित भी कर दिया है। यूएसए में 1000 करोड़ डॉलर के पैकेज की घोषणा की जा चुकी है।

कोरोना वायरस ने न केवल चीन अपितु सम्पूर्ण विश्व को एक ऐसे मुहाने पर खड़ा कर दिया है जहाँ मानव जीवन को संकट में डालने के साथ वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदियों की ऐसी पृष्ठभूमि तैयार कर दी है जिससे सम्पूर्ण विश्व को उभरने में एक लम्बा समय लगेगा। वैश्विक स्तर पर इस संकट की घड़ी में विश्व में सभी देशों को अनिवार्य रूप से एक जुट होना पड़ेगा तब कहीं जाकर कोरोना रूपी महामारी से विश्व बाहर निकलेगा और आर्थिक रूप से सक्षम और सशक्त बन सकेगा।

–प्रशांत बाजपेई

शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

16 Corona Strikes the Economy: A Serious Challenge

Coronavirus outbreak was first reported in wuhan, chin on 31 December,2019.before reading in detail about the impact, first,let us study about coronvirus.its spread haas left businsses around the world counting costs.

Impect on global Economy

China accounts for approximately 19.71%of global GDP at purchasing power parity and abviously it will impact the economy globaily. The GDP of china is expected to decelerate by 1-1.25parcentage points over 2020 because of less production. Therefore, it is estimated that the global GDP will suffer an impact of around – 0.5%. china accounts for 13% of world exports and 11% of world imports.the lockdown woll affect around 500 million people in the country that will deeply impact its consumption of goods.

Travel among hardest hit

The travel industry has been badly damaged, with airlines cutting flight and tourists cancelling business trips and hollidays. Goverments around the world have introduced travel restrictions to try to contain the virus. The EU banned travellers from outsite the bloc for 30 days in an unprecedented move to seal its borders becouse of the coronavirus crisis.

in the us, the trump administrtion has bannedtravellers from european airports from entering the US. data from the flight tracking service flight radar 24 shows that the number of flight globally has taken a huge hit.

Affects on big car companies

Restrictions have affected the supply chains of big companies such as industrial equipment manufacturera JCB and carmaker nissaan. Shops and car dealerships have all reported a fall in demand.

Chinese car seles, for example, dropped by 86% in february. More carmarkers, like teslaor geely, are now selling carsonline as customers atay away from showrooms.

Even 'safer' investments hits

When a crisis hits, investors often choose less risky investments. Gold is traditionally considered a 'safe haven't for investment in times of uncertainty. But even the price of gold tumbled briefly in March, as investors were fearful about a global recession.

The world's economy could grow at its slowest rate since 2009 this year due to the coronavirus outbreak, according to the organization of Economic cooperation and development (OECD). The think task has forecast growth of just 2.4% in 2020, down from 2.9% in November.

Impact of corona virus on the Indian economy

_____Import the dependence of India on china is huge. Of the top 20 products(at the two digit of HS code) that India imports from the world. China accounts for the significant share in most of them.

For Automotive parts and fertilisers China's share in India Import is more than 25% around 65 to 70% of active pharmaceutical industries and around 90% of certain mobile phones come from China to India. In China about 72% of companies in India are located in cities like Shanghai, Beijing, Provinces of Guangdong,Jiangsu and Shandong shipping Industry. Coronavirus out break has impact the business of cargo movement service provider. As per the sources, per day per vessel has declined by more than 75-80% in dry bulk trade.

Auto Industry: It's impact on indian companies will vary and depend upon the extent of the business with China. China's business no dout is affected. However, current levels of the inventory seem to be sufficient for

the indian industry. If the shutdown in china continues then it expected to result in an 8-10% contractions of Indian auto manufacturing in 2020.

Pharmaceuticals Industry: Despite being one of the top formulations of drug exporters in the world, the pharma industry of india relies heavily on import as of bulk drugs. Due to coronavirus out break it will also be impacted textiles industry, Due to coronavirus out break, several garments/textiles factories in China have halted operations that in turn affecting the exports of fabric, yarn and other raw materials from India.

Solar Power Sector: Indian developers may face some shortfall of raw materials needed in solar panels/cells and limited stocks from China.

Therefore, we can say that due to the current outbreak of coronavirus in China. The import dependence on China will have a significant impact on the Indian industry.

-Priyanka Tiwari

Ph.D (History)

Agra University

Dayitva- Secretory of Agra University

ABVP Agra (Braj Prant)

17 जरूरतमंदों के लिये एबीवीपी कार्यकर्ताओं की पहल

वैश्विक महामारी कोरोना वायरस की बजह से पूरी दुनिया में कोहराम मचा हुआ है इस जानलेवा वायरस की बजह से दुनिया भर में अब तक 10,15,964 से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं वहीं इससे अब तक 53,219 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है एवं 2,12,995 मरीज ठीक हुए हैं। वैश्विक स्वास्थ्य संगठन (WHO) के महानिदेशक टैड्रोस एडरेनॉम गेबरेयसस ने कहा है कि भले ही हम संकट के बीच में हैं लेकिन आवश्यक स्वास्थ्य सेवायें जारी रखनी चाहिये। शिशुओं का जन्म अभी भी हो रहा है। टीके अभी भी वितरित किये जाने चाहिये और लोगों को अभी भी अन्य बीमारियों के लिये जीवन रक्षक उपचार की आवश्यकता है।

बतादें कि इस वक्त देश में 21 दिनों का लॉकडाउन लगा हुआ है। प्रधानमंत्री ने देश की 135 करोड़ जनता से लॉकडाउन का पालन करने एवं सरकार प्रशासन का सहयोग करने की अपील की है। सभी लोगों को सरकार की तरफ से एहतियात बरतने की सलाह दी गयी है। चीन के वुहान से फैला यह वायरस अपने पैर भारत में भी पसार चुका है। भारत में अभी तक 2579 से ज्यादा लोग संक्रमित हैं जब कि वायरस से 159 लोग ठीक हुए हैं। भारत में कोरोना वायरस से 57 लोगों की मृत्यु हुई है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा कोरोना वायरस को फैलने से पहले इसके प्रभाव को समाप्त करने के लिए लोगों को विभिन्न प्रकार से जागरूक किया गया। जगह-जगह जाकर नगर इकाइयों ने लोगों से सोशल डिस्टैंसिंग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया और कई स्थानों पर सेनेटाइजर एवं मास्क भी बाँटे गये। इस महामारी के समय देश के विभिन्न क्षेत्रों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने भोजन के पैकेट भी जरूरत मंद लोगों को बाँटे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सभी प्रकार के राष्ट्रीय आपदा में व देश के ऊपर आये विभिन्न विकट परिस्थियों में भी आम जनों छात्र-छात्राओं की मदद के लिये हमेशा प्रयत्नशील है। उसके इसी कार्य का फल है। कि संगठन पूरे वर्ष छात्र-छात्राओं के बीच मौजूद रहता है। एबीवीपी शैक्षिक क्षेत्रों में तो कार्यरत है ही साथ इस आपदा की घड़ी में सामाजिक क्षेत्र में योगदान देने के लिये कदम से कदम मिलाने के लिये तैयार है। विश्व के कई विकसित देश कोरोना की चपेट में आये हैं वहीं भारतीय संस्कृति के कुछ विशिष्ट लक्षण भारतीय संस्कृति के जीवन दर्शन व अभिनय जीवन शैली के कारण भारत में इसका प्रकोप रोकने के लिये प्रभावी हैं। जहाँ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एक ओर छात्र-छात्राओं के बीच पठन-पाठन को लेकर प्रयासरत है वहीं उनके स्वास्थ्य को लेकर भी विभिन्न अभियानों का आगाज करते रहते हैं। जागरुकता अभियान के दौरान कोरोना के प्रभावित लक्षण एवं बचाव के बारे में लोगों को पोस्टर के माध्यम से एवं सोशल मीडिया द्वारा जानकारी दी गई साथ ही परिषद के कार्यकर्ताओं ने विभिन्न जिलों में कई स्थानों पर इकाइयों द्वारा शिविर लगाकर स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकरी दी गई। इसके अलावा चिकित्सकों

की विभिन्न हैल्प लाइन नम्बर जारी किये गये। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का समाज के लोगों से भी आव्हान है कि वे प्रशासन, चिकित्सा कर्मी, सफाई कर्मियों का पूर्ण सहयोग करें एवं लॉकडाउन का पालन करें। स्वयं भी बचें और सभी को बचायें।

अभाविप सोशल मीडिया के माध्यम से कोरोना वायरस के सन्दर्भ में जागरूकता अभियान जारी रखेगा।

महामंत्री निधि त्रिपाठी जी ने कहा कि देश के स्वास्थ्य कर्मचारियों तथा प्रशासन ने युद्ध स्तर पर इस महामारी से निपटने के लिये अब कदम उठाया वह प्रसंशनीय है इस खतरे के टलने के उपरान्त ही हम कार्यक्रम करेंगे। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि पूरा विश्व इससे शीघ्र मुक्ति पाये।

जय हिन्द!

वन्दे मातरम्!!

-डॉ० हर्षित चौहान

प्रान्त MEDEVISION प्रमुख

अभाविप ब्रज प्रान्त

18 कोरोना के कारण एक दूसरे करीब आते देशों के लिये भारत प्रेरणाश्रोत

21वीं शताब्दी को एक त्रासदी काल के रूप में भविष्य देखेगा। ऐसा कहना कुछ गलत नहीं होगा। क्योंकि कोरोना महामारी के प्रकोप ने वास्तव में ही पूरे विश्व को संकट में डालदिया है।

वस्तुत: इससे निजात पाने के लिये प्रत्येक देश कमर तोड़ कोशिशों में लगा है। ऐसे में युवा राष्ट्र भारत ही इस वैश्विक महामारी से लड़ने के लिये जंग के मैदान में है।

भारत के लिये अन्य देशों के मुकाबले कोरोना को हराना एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि भारत विश्व में दूसरे दर्जे का अधिक आबादी वाला देश है और स्वास्थ्य की दृष्टि से भारत के पास सीमित सुविधाएं हैं। बावजूद इसके भारत सरकार द्वारा तेजी से लिये गये फैसलों से स्थिति नियंत्रित है। गौरतलब है कि अब पूरा विश्व भारत से सीख रहा है। जब कि मेडीकल इंफ्रास्ट्रक्चर का केन्द्र इटली, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, इरान, स्पेन, फ्रांस, ब्रिटेन जैसे बड़े-बड़े देशों के लिए कोरोना से लड़ना टेड़ी खीर हो गया है। लेकिन भारत ने कोरोना के प्रकोप से आने वाली भयानक स्थिति को समय रहते भांप लिया और सभी अन्तर्राष्ट्रीय उड़ान, सभी अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें बन्द कर दीं ताकि ग्लोबल ट्रांसमिशन से भारत को दूर रखा जाये। कारोबार या पर्यटन के बाद भारत लौटे नागरिकों को शुरूआत से ही जाँच करने, अलग रखने और निगरानी की व्यापक और मजबूत व्यवस्था लागू कर दी गई।

इसी के चलते गम्भीर एवं त्वरित ऐहतियात बरतते हुए भारत ने पूरे देश में 21 दिन का लॉकडाउन घोषित कर दिया जबकि इस समय तक वाकी देश बीमारी से बचने के रास्ते खोजने में लगे थे। अभी तक जिन देशों ने (पेरिस, रोम, वुहान) लॉकडाउन घोषित किया उनकी सरकारों को अपनी शक्तियों के बलबूते पर जनता पर लागू करना पड़ा। यहाँ तक कि यूरोप देश हंगरी को कोरोना से बचने के लिये तानाशाही रुतवे को अपनाकर अपना लोकतंत्र ही बदलना पड़ा। वहीं भारत में सरकार के प्रति जनता का समर्थन, सकारात्मक सोच और विश्वास ने ये साबित कर दिया कि इस वैश्विक आपदा से लड़ने के लिए पूरा देश एक साथ है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक आवादी की दृष्टि से भारत अब तक कोरोना से संक्रमण की तृतीय स्टेज तक पहुँच सकता था लेकिन जितनी तेजी से कोरोना का संक्रमण अपने पैर फैलाता उतनी ही तेजी से भारत सरकार ने क्रमवार प्रतिक्रियाओं द्वारा स्थिति नियंत्रित कर ली।

ऐसे में अब विश्व स्वास्थ्य संगठन भी दुनिया को भारत से सीखने की हिदायत दे रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्यक्ष माइकल रेयान ने कहा कि भारत पहले भी गम्भीर बीमारियों जैसे स्मॉल पॉक्स और पोलियो को जड़ से खत्म करने में रहा है। अब विश्व भर की नजरें भारत पर हैं। कोरोना से लड़ने की नीतियों को विश्व के अन्य देश भी अपना रहे हैं।

इतना ही नहीं भारत पुरातन संस्कृति एवं संस्कार भी इस वैश्विक आपदा से लड़ने में हथियार साबित हो रहे हैं। भारतीय परिदृश्य में अभिवादन में नमस्ते, घर में प्रवेश से पहले हाथ धोना और वातावरण व्याप्त विषाणुओं को शंख या किसी ध्वनि यन्त्र से खत्म करने जैसे नीतियों का विश्व अनुसरण कर रहा है।

"वसुधैव कुटुम्बकम" एवं "सर्वे भवन्तु सुखिन:" भारतीय संस्कृति के मूल भाव एक बार फिर भारत दुनिया के सामने पेस करने में सफल रहा है। कोरोना जैसी वैश्विक आपदा से लड़ने के लिये भारत की सार्क देशों के साथ सामूहिक नीति बनाने की पहल से पूरे विश्व भारतीय भाव को पहचाना है।

भारत की ओर से सार्क देशों को इस विपदा से निपटने के के लिये इमरजैंसी फण्ड का ऐलान भारतीय संस्कारों का एक नया उदाहरण है। कोरोना को जन्म देने वाले शहर वुहान में फसे मालद्वीप देश के सैकड़ों नागरिकों को भारत ने बाहर निकाला। देखा जाये तो इस वैश्विक आपदा से लड़ाई में भारत पूरे विश्व का नेतृत्व कर रहा है।

ये कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि आने वाले समय में निश्चित ही भारत कोरोना महामारी को हराने में सभी आर्थिक महाशक्ति देशों के लिए एक नया उदाहरण बनेगा।

–गुंजन पंडिता

केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य

अभाविप मथुरा (ब्रज प्रान्त)

19 Presentation of Indian Culture and Culture in the Current Globle Council

The story of the greatness of Vshwa guru India has been unleashed from anyone in the world.

In front of many great soul sand great culture from the land of India, the world has be crowned.

Nowadays currently CORONO VIRUS (COVID-19) disease have come to an Epidemic in the world . After world war second there was never such a crisis on human life . Due to this it's impact has been seen well in many parts of the world and in all classes Globally.

Due to an epidemic social distance is being stressed, not handshake and emphasis is being laid on not consuming meat. All this the eternal religion of India and thousands of years ago was adopted by Hinduism.

India is seeing a majority of the Hindu population worldwide in its entirety. Rites of Sanatan Dharma , known for thousands of years we find that the world is taking about those change today that was told on thousands of years earlier.

For an example Indian culture describes the rite of joining hands rather than shaking hands . The scientific source behind it states that , When the person greets with folding hands, and his hands on the chest and eyes are closed , by doing this a positive energy is transmitted and mind become calm ,in this way that person can well welcome their guests.

Vegetarian food has always been a speciality of Hinduism, even in the aarti of God we wish for the welfare and good will of all beings . Not only Hinduism every religion of the world is assuming the killing the innocent is a gross sin . But sadly some people commit such gross sin for their taste only.

In the period of Hindu kings in the history of India when the meeting was held ,Social distance was taken care of there Analysing the hall of Hindu kings ,it shows that there is a good attention to this things.

Conclusion is that Hindu culture and culture are always workshipabl and appreciatable that why India was call Vishwa Guru . Today Indian culture and culture are being adopted today to fight this epidemic but Sadly India is lagging behind. We should all be proud on Indian culture and never be little bit hesitate to adopted and following our culture.

- Ankit Pathak

Agra (U.P.)

20 मेरे अनुभव एवं जिम्मेदारियाँ लॉकडाउन एवं जनता कर्फ्यू के समयकाल में

जैसा कि विदित है कि कोरोना नामक बीमारी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महामारी का रूप धारण कर लिया है। भारत भी इस महामारी से अछूता नहीं रह पाया। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन ने भारत के कोरोना से लड़ने के लिये किये गये इंतजामों की सराहना की है और उम्मीद जताई है कि भारत कोरोना से लड़ाई में शानदार जीत हासिल करेगा। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 21 दिनों का लॉकडाउन घोषित किया है जिससे संक्रमण के फैलने की जो चेन चल रही थी (जैसे एक व्यक्ति से आठ में संक्रमण और आठ से अस्सी में इस प्रकार से अनगिनत) वह रुक गई।

इस समयकाल में मेरे अनुभव निम्न हैं–

- आज तक मनुष्य खुले आसमान में उड़ने वाले पंक्षी और जानवरों को कैद करके अपना मनोरंजन करता था, पर अब खुद कैद हुआ तो उस पीड़ा को महसूस कर रहा है।
- व्यक्ति को प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिये प्राकृतिक संसाधनों का सीमित मात्रा में उपयोग करना चाहिये।
- जब आपदा आती है तब देशवासी सारे विरोध भूलकर विपदा से लड़ने में एकता का परिचय देते हैं।
- मुझे खुशी है कि लॉकडाउन के चलते ही सही मेरे पिता और पूरा परिवार एक साथ समय व्यतीत कर रहा है और पूर्वजों का इतिहास और कहानियाँ सुना रहे हैं।

इस समयकाल में मेरी जिम्मेदारियाँ निम्न हैं–

- मैंने इस समय शहर के अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं समाजसेवियों जो गरीबों को खाना वितरण कर रहे हैं, के संपर्क सूत्र ले रखे हैं और हकदार लोगों को मदद दिलवा रहा हूँ।
- मैं इस समय सोशल मीडिया पर किसी भी भ्रामक या अफवाह वाली पोस्ट डालने वालों को उस पोस्ट की सत्यता से अवगत करा रहा हूँ और डिलीट करवा रहा हूँ।
- मैं अपने घर तथा आस–पास में लॉकडाउन का पूर्णत: पालन करवा रहा हूँ।

–हरिमोहन सिंह
B.A. (द्वितीय वर्ष)
राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ
तहसील संयोजक, अभाविप बदायूँ (ब्रज प्रान्त)

ABVP BRAJ

#IndiaFightsCorona

प्रांतीय कार्यालय
29/31, धीरेन्द्र भवन, राजा की मण्डी, आगरा - 282002, उ०प्र०
Mob. : +91 9897909888, E-mail : brajabvp@gmail.com
/ABVPBraj